Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 4.94 ISSN No. 2456-1665

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा की दशा और दिशा

प्रा. डॉ. सोनल रा. नंदनूरवाले
स.भु. विज्ञान महाविद्यालय
औरंगाबाद.

संसार का नियम हैं, कि, वह होनेवाले हर परिवर्तन को स्वीकारता है। इस सूचना क्रांति ने सारे विश्व को बदल दिया है। माध्यम इलेक्ट्रॉनिक हो या मुद्रित भाषा के बिना अभिव्यक्त नहीं हो सकता। इस ग्लोबल व्यापी टेक्नोट्रॉनिक युग में अंग्रेजी के साथ कदम मिलाकर हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर प्राप्त कर चुकी है। भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी हिंग्लीश का स्वरूप प्राप्त कर रही है।

साहित्य में कथा, कविता, उपन्यास तथा नाटक का समावेश होता है। हिंदी हो या भारतीय प्रादेशिक भाषा का साहित्य हो संचार माध्यम कलाकृति के उँचाई को छू नहीं सकते। साहित्य की अवधारणा और संचार माध्यमों की अवधारणा इसमें गहरा अंतर पड़ रहा है। फ्रेजर के अनुसार भूमंडलीकरण के बाद संचार माध्यमों की भाषा बदल गई है। स्थल उपयोगिता, काल उपयोगिता तथा मूल्य उपयोगिता इन तीन तत्वों के उपर संचार माध्यम चल रहे हैं। व्यावसायिक तथा विज्ञापन की भाषा विचारों के भाषा के ऊपर हावी हो गई है। प्रायोजक तथा विज्ञापनकर्ता के भावनाओं को सामने रखकर समाचारों का निर्धारण किया जाता है। स्थूल निर्धारण मूल्यों पर निर्भर होना चाहिए लेकिन वह केवल अपने स्वार्थ और अपने मालिक का हित और कार्पोरेट हाऊस की भलाई इसी से ही निमित्त होते है। पहले संचार के माध्यम भाषा को संपन्न बनाते थे। आज वे भाषा को निम्न दिशा दे रहे है।

भाषा समाजसापेक्ष है। अतः समाज परिवर्तन के साथ इसका अभिन्न सम्बन्ध है। विचार विनियम के साथ एक की भाषा दूसरी से प्रभावित होती है। बोलनेवाला बोलता है और उसी समय श्रोता कुछ नवजात शब्दों को ग्रहण करता है। इसी तरह एक देश की भाषा का प्रभाव दूसरे देश की भाषा पर तो एक प्रान्त की भाषा का प्रभाव दूसरे प्रांत की भाषा पर, यह प्रक्रिया ठोस रूप में दृष्टव्य भले ही न हो अखण्ड होती है। इसी प्रक्रिया के कारण हर भाषा का शब्द संग्रह विकासोन्मुख होता है। जहाँ तक हिंदी भाषा के शब्द समूह का सवाल है उसे हम मुख्यतः दो वर्गो में विभाजित किये देख सकते हैं। इनमें से पहलेवर्ग के अन्तर्गत शब्दों की व्युत्पत्ति का विचार रचना की दृष्टि से तो, दूसरे वर्ग के अंतर्गत उदगम की दृष्टि से आता है। भवानी प्रसाद मिश्रजी ने साक्षतकार में हिंदी सागरस्थानी भाषा है यह कहाँ।

हिंदी का इंग्लिश रूप हिंदी की लोकप्रियता का प्रमुख कारण बन रहा है। आज हिंदी रोजगार से जुडकर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही है। विश्व की किसी भी भाषा की अपेक्षा हिन्दी ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने का सामथ्र्य रखती है। आज का युग सूचना - प्राद्योगिकी का है। इंटरनेट पर हिन्दी का काम दिखायी देता है। भारत सरकार की कम्प्युटर अनुसंधान क्षेत्र की प्रमुख संस्था 'सी डैक' ने कम्प्युटर पर नागरी लिपि स्थापित करने हेतु बृहत्तर कार्य किया है। किन्तु सूचना प्राद्योगिकी की दृष्टि से जो कार्य रोमन आदि लिपियों में दिखायी देता है, वह कार्य हिन्दी में न्युनतम दिखायी देता है। अतः हिन्दी का महत्व राष्ट्रीय से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने के लिए हमारे विद्वानों तथा सॉफ्टवेयर इंजिनियरों को परिश्रम और अभ्यास की अधिक आवश्यकता है। अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिक जीवन तथा ज्ञान विज्ञान बहुविध स्थितियों और आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतू हिन्दी के विविध रूप विकसित होते जा रहे है। हिन्दी का यह रूप किसी महत्त्वपूर्ण या विशिष्ट प्रयोजन के संदर्भ में प्रयुक्त हो रहा है। यह प्रयुक्त भाषा ही प्रयोजनमूलक हिन्दी **(Functional Hindi)** लचीली हिन्दी **(Flexible Hindi)** प्रायोगिक या व्यवहारिक हिन्दी कह सकते है, किन्तु सर्वमान्य से प्रयोजनमूलक' हिन्दी ही कहा गया है।

वैश्वीकरण के परिणाम :

१९९० के बाद सारे विश्व में अर्थकरण, उदारीकरण और वैश्वीकीकरण से जीवन शैली में परिवर्तन होता-सा दिखाई देता है। अर्थकरण के बदलाव का परिणाम प्रसार माध्यमों पर भी अधिक दिखाई देता है। वैश्वीकीकरण की यह कल्पना सारे विश्वभर में घटित एक जैसी प्रक्रिया के लिए उपयोग में लायी गयी है। 'वल्ड वाईड वेब' के कारण सारे विश्व में सगणक एक दूसरे से जोड़ दिया गया है। प्रथम प्रगत राष्ट्रों से जानकारी के प्रसारण की गति अधिक तीव्र हुई है। जानकारी समाज की निर्मिती के साथ विचार प्रहार के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों के रक्षणार्थ इंटरनेट आधार संहिता भी हो इस संदर्भ में युनुस्को की ओर से अंतर्राष्ट्रीय परिषद आयोजित की गयी थी जिसमें इस विषय पर विचार मंथन किया गया। अमेरिका में प्रथम इंटरनेट यह यंत्रणा संरक्षण क्षेत्र में जानकारी के प्रसारणार्थ उपयोग में लायी गयी। बाद में यह यंत्रणा औद्योगिक, खेती,सामाजिक और आर्थिक विकास के क्षेत्र में काम करने लगी मानवी जीवन के प्रगति की दशा दिशा निर्धारित करने में करने में जानकारी का यह महाजाल एक नया वरदान साबित हआ। मोहन आपटेजी ने कहा व्यक्ति से टेलीफोन या पत्र द्वारा संपर्क स्थापित करने के दिन शीघ्र ही पीछे रह जायेंगे और इंटरनेट पर ई-मेल द्वारा परस्पर साक्षात संपर्क प्रस्थापित किया जाएगा। अतः हमारा देश तकनीकी दृष्टि से प्रगत तथा जानकारी के दृष्टि से समृद्ध हो गया है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा आनेवाली भाषा में।' अनेक भाषाओं का मिश्रण पाया जा रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम :

इस माध्यम का क्षेत्र रेडियो दूरदर्शन, टेलीप्रिन्टर, टेलीकास्ट, कम्प्यूटर आदि हैं। इनके द्वारा सामान्य व्यक्ति तक जानकारी पहुँचायी जाती है। जिसमें शब्द सरल स्पष्ट तथा सुबोध होने चाहिए। ऐसे शब्दों का प्रयोग भी वर्जित समझा जाना चाहिए। जिन्हें शीघ्र ही समगने में श्रोताओं को क'िनाई होती है। और वचाक को भी पढ़ने में दिक्कतें आती है। जैसे - संपृकतावस्था, संष्लेषकात्मकता आदि। अतः कष्टप्रद शब्दों का प्रयोग कदापि न करें क्योंकि उनको, पढते समय समाचार वाचक की जबान लड़खड़ाने की संभावना है। इस क्षेत्र में भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अधिक किया जा रहा है। दि. २९.०३.१९९५ के राज्यसभा समाचार में कहा 'इस बात पर उन्होंने सभा से 'वॉकआऊट' किया' हिंदी वाक्य में यह शब्द अटपटा सा लगता है, इसके स्थान पर 'सभात्याग' या अन्य शब्द का प्रयोग भी किया जा सकता था।'

दृक-श्राव्य

इस क्षेत्र में प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोग समय तथा स्थिति को ध्यान में रखकर बड़ी ही सर्तकता से किया जाता है। रेडिओ तथा दूरदर्शन के लिए शब्दों को छाँटनी समाचार पत्रों की अपेक्षा अधिक करनी पड़ती है। आकाशवाणी के हिन्दी समाचारों को लीजिए दस मिनिट के प्रसारण में कोई एक हजार शब्द प्रसारित किये जा सकते है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के लिए प्रसारित होनेवाले सारे कार्यक्रमों को प्रसारित करने के ढंग से अधिक भाषा प्रभावशाली रोचक होनी चाहिए। ऐसा कदापि न हो कि प्रसारण सुनते ही तुरंत उसे समझ न सके। इसलिए पत्रकारिता में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रत्येक शब्द और वाक्य विन्यास स्पष्ट और प्रासंगिक होना चाहिए।

विज्ञापन

समाचार-पत्र, रेडिओ तथा दूरदर्शन द्वारा हिन्दी भाषा में विज्ञापन प्रसारित किये जाते है। समय स्थिति और वस्तु के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए विज्ञापन के क्षेत्र में प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोग अधिकाधिक किया जा रहा है। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, बैंकों तथा विविध कम्पनियों और फैक्ट्रियों में उत्पन्न वस्तुओं के विज्ञापन प्रसारित किये जाते हैं। इन विज्ञापनों में प्रयोजनमूलक हिन्दी को अधिक लचीली बना दिया गया है। एक विज्ञापन को प्रस्तुत करते समय विभिन्न भाषाओं के शब्दों वाक्यों तथा पद रचना का प्रयोग किया जाता है। जैस - 'दिल मांगे मोर' किंतू 'दिल मांगे और' क्यों नही? अंग्रेजी इस प्रकार अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग विज्ञापनों में जनता को आकर्षित करने के लिए जानबूझकर भी

किया जाता है। अतः इस प्रकार के विज्ञापन वाक्य-विन्यास, पद रचना तथा पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से विसंगतिपूर्ण लगते है। समाज तथा आर्थिक दृष्टिकोन को समज रखकर विज्ञापन बनाये जाते है।

मुद्रीत माध्यम :

समाचार-पत्र

समाचार पत्रों में विविध पृष्ठों की हिन्दी भिन्न-भिन्न होती है। समाचारों की, साहित्यिक पृष्ठ की, वाणिज्य व्यापार के पृष्ठ की, हिन्दी तथा खेलकूद के पृष्ठ की हिन्दी पूर्णत: एक नहीं है। इन सभी में हमें अभिव्यक्ति के स्तर पर पारिभाषिक शब्दों आदि की दृष्टि से अंतर मिलेगा। इन विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होनेवाली हिन्दी की शब्दावली वाक्य विन्यास पद रचना का सरल होना आवश्यक है। क्योंकि समाचार पत्र सामान्य जनता तक पहुँचनेवाला माध्यम है। इस क्षेत्र में भाषा की एकरूपता का होना अनिवार्य है। यहाँ के स्थानिक समाचारपत्रों मे लालकृष्ण अडवानीजी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में शीर्षक इसप्रकार था 'लालकृष्ण आडवानीजी की हालत बिघड़ी दूसरे समाचार पत्र में था लाल कृष्ण अडवानीजी' की तबियत की हालत में खराबी।' अत: पारिभाषिक शब्दों का चयन भी वाक्य रचना करते समय किस प्रकार किया जाय इसका अधूरा ज्ञान नहीं होना चाहिए।

कार्यालयीन हिन्दी

मसौदा लेखन को ही प्रारूप लेखन,आलेखन प्रालेखन अथवा प्रारूपण भी कहा जाता है। इसका सामान्य ज्ञान उच्च अधिकारी से लेकर लिपिक वर्ग तक होना अनिवार्य होता है। जिसमें अभिव्यक्ति कि सरलता तथा सक्षमता का होना अनिवार्य है। क्योंकि मसौदा ही एक तथ्य है। प्रशासनिक कार्यों में आज भी बने बनाये नमूने पाये जाते है। जिसमें संक्षिप्तीकरण होना अनिवार्य है। जैसे - उपरोक्त संदर्भित पत्रानुसार ऊपर विषय तथा संदर्भ के बाद भी पुनः दोहराने की आवश्यकता नहीं, तथा मसौदा अनुमोदन के लिये पेश है। इसके बजाय अनुमोदनार्थ भी कहा जाय तो समय की बचत और समझने में कष्टप्रद न होगा। मसौदा लेखन प्रायः इन सरकारी कार्यो में किया जाता है। जैसे (१) संकल्प (२) अधिसूचना (३) पृष्ठांकन, (४) अनौपचारिक टिप्पणी, प्रेस विज्ञप्ति, कार्यालयीन आदेश, प्रतिवेदन तार, अनुस्मारक आदि।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के क्षेत्र

प्रयोजनमूलक हिन्दी के क्षेत्र मुख्यतः रोजमर्रा के जीवन में होनेवाले कार्यकलापों से अधिक जुड़े हुए हैं। जिसकी संरचना व्याकरण की अनिवार्यता के बजाय व्यवहारिक उपयोगिता से जुड़ी हुई है। अतः प्रयोजनमूलक हिन्दी समाज सापेक्ष है। इसलिए यह भाषा विविध कामकाज के क्षेत्रों में प्रयुक्त हिन्दी भाषा है। जिसमें - बोलचाल की हिन्दी, व्यापारी हिन्दी या प्रशासकीय हिन्दी, वैज्ञानिक तथा तकनीकी हिन्दी, जनसंचार माध्यमों की हिन्दी जिसमें केंद्र या राज्यशासन के पत्रव्यवहार विधान मंडल की कार्यवाही, संसदीय विधियाँ, कार्यालयीन पत्रचार, सरकारी संकल्प, अधिसूचना, प्रेस विज्ञप्तियाँ आयोग समितियाँ, अभिकरण मसौदे, निविदा, लायसेन्स परमिट, बैंकीय सेवा तथा डाक तार आदि में प्रयुक्त होती है। व्यवसायिक पत्रों, विज्ञापनों दुक श्राव्य माध्यमों में शब्दों की भूमिका निभायी है।

व्यापार क्षेत्र की हिन्दी

व्यापार क्षेत्र में प्राय: यातायात के कारण राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार होने लगा जिसके कारण शब्दों का आदान प्रदान आपस में होता रहा। मंडियों सर्राफों, दलालों, सट्टा बाजार, शेयर बाजार, आदि में भाषा का भी अपना विशिष्ट रूप बन गया। और कई शब्द हिन्दी में प्रचलित हो गये जैसे - होटल, बैरा, साबुन, लॉटरी, सिल्क, सिगरेट, व्यापार क्षेत्र में अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग किया गया है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र

सारे भारत को ध्यान में रखकर भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने १५ जनवरील १९६५ को हिन्दी की प्रशासनिक शब्दावली का पहला प्रारूप प्रकाशित कर अनेक वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावलियों का निर्माणकर हिन्दी की प्रगामी प्रवृत्ति को विकसित करने में योगदान दिया। विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी की भाषा अन्य भाषाओं से भिन्न

होती है। उसमें विशिष्ट सूत्र एवं पदार्थो की विशिष्ट किन्तु निश्चित अर्थ में अभिव्यक्त किया जाता है। वैज्ञानिक शब्दावली विशेषतः विज्ञान के प्रसंग में पारिभाषित तथा एकार्थी होती है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी विशिष्टता में ढालने के लिए हिन्दी ने संस्कृत तथा अंग्रेजी शब्दों को अपनाया है। विशेषतः अभियांत्रिकी, फैक्टरी, मिल, तंत्र-निकेतन, रासायनिक प्रयोगशालायें आदि क्षेत्रों में प्रयोजनमूलक हिन्दी निरन्तर विकसित हो रही है।

साहित्यिक क्षेत्र

केवल व्यवसायिक क्षेत्र में ही नहीं साहित्य में भी संवादों को प्रयोजनमूलक हिन्दी में विशेष स्थान दिया गया है। संवाद के बिना व्यवहारिक हिंदी जीवित ही नहीं रह सकती। संवादों का प्रयोग हिन्दी के नाटकों रूपकों एकांकियों चलचित्रों दूरदर्शन धारावाहिकों संभाषणों, रेडियो रूपांतर या रेडियोरूपक आदि में संवाद लेखक को प्रगामी हिन्दी के शब्दों का चयन करते हुए कलात्मक प्रतिभा का उपयोग प्रभावी संवाद योजना के निर्माण के लिए करना पड़ता है। अतः संवाद शैली के विभिन्न प्रभावों के कारण सिनेमा दूरदर्शन एकांकी तथा नाटकों के माध्यम से हिन्दी का प्रयोजनमूलक रूप उभरकर सामने आ रहा है।

निष्कर्ष :

१) प्रयोजनमूलक हिन्दी व्यवहार क्षेत्र में सेवा माध्यम की भाषा होते हुए भी हिन्दी के मूल अस्तित्व को बचाये रखे। क्योंकि विशिष्ट प्रयोजन के लिये प्रयुक्त होनेवाली भाषा को अधिक लचीली बनायी जाये तो वह अपने अस्तित्व को समाप्त कर देगी और पुनश्च एक नयी भाषा हमारे सामने शब्दों का अटपटा-सा श्रृंगार कर खड़ी हो जायेगी।

२) भाषा को तकनीकी बनाने के प्रयास में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय शब्द प्रयोग को प्रयोजनमूलक हिन्दी में स्थान दिया गया, इसका मतलब यह नहीं कि अन्य भाषाओं के बोझिल तथा कठिन वजन उसपर रख दिया जाय जिस के कारण हिन्दी-हिन्दी न रहकर कुछ और बन जाय।

३) हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों के लिए पर्यायी हिन्दी शब्द होने के बावजूद भी आसानी से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। परिणामतः हिन्दी पर अन्य भाषाएँ धीरे-धीरे हावी हो जायेंगी और हिन्दी अपना मूलरूप खो बै'ेगी। इसलिए अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाए।

४) भारतीय तथा विदेशी शब्द हिन्दी ग्रहण करती है, तो वह हिन्दी का विकास है। किन्तु उसके सम्पूर्ण, स्वरूप को खंडित करना सारे विश्व को आर्थिक स्वार्थी दृष्टिकोण है। यह हमें समझाना चाहिए।

५) वैश्वीकरण के युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा भाषा में भी बहत परिवर्तन आया है। भाषा बदलती है तो संस्कृति और समाज में भी परिवर्तन आता है। कुछ देश ऐसी है कि इलेक्ट्रॉनिक मिडिया हो या और कोई माध्यम वे अपनी भाषा में शब्दों की घुसपैं' पसंद नही करते जिन में इंग्लंड, फ्रान्स, जर्मनी, इटली एक ही खंड के होकर भी अपनी अपनी भाषा के कारण भिन्नभिन्न है। वे अपनी भाषा को खंडीत नही होने देते,चाहे इलेक्ट्रॉनिक मिडिया हो या और कोई वे हिन्दी के शब्द अंग्रेजी में कभी नही लेते।

६) भाषा संस्कृति की संवाहिका है। हमें अपनी भाषा और संस्कृति को खंडीत नही होने देना है, इतनी बड़ी चुनौती कभी नही आयी। उसके अस्तित्व को बचाए रखना है चूँकि भाषा हमारे व्यक्तित्व की पहचान है।

संदर्भः

१. भुमंडलीकरण और हिन्दी - डॉ शीतला दुबे
२. भुमंडलीकरण और मीडिया - कुमुद शर्मा
३. राजभाषा हिन्दी